''किस अधिकार से?''

एक दिन जब यीशु मंदिर में सिखा रहा था, तो महायाजकों और पुरनियों ने आकर उससे पूछा, ''तू ये काम किस अधिकार से करता है? और तुझे यह अधिकार किसने दिया है?'' (मत्ती 21:23)। यीशु ने उनके प्रश्न का उत्तर देने से इन्कार कर दिया; वह जानता था कि वे बुरी नियत से यह प्रश्न पूछ रहे हैं। यद्यपि, यह प्रश्न सही था, और यीशु ने अन्य अवसरों पर इसका उत्तर भी दिया था। उसका ऐलान था कि उसकी शिक्षा पिता की ओर से है।

आज, प्रत्येक धार्मिक रीति के बारे में ऐसे ही प्रश्न पूछने का विचार अच्छा है। हमारे पिता को सम्भवत: एक उत्तर अच्छा लग सकता है कि यह रीति ''मसीह के अधिकार से है'' यीशु को ''सारा अधिकार'' दिया गया है (मत्ती 28:18)। वह कलीसिया का सिर है (इफिसियों 1:22, 23)। आज परमेश्वर हमारे साथ पुत्र के द्वारा बात करता है (इब्रानियों 1:2)। रूपान्तरण के समय इस तथ्य पर जोर दिया गया था जब परमेश्वर ने कहा था, ''इसकी सुनो!'' (मत्ती 17:5; मरकुस 9:7; लूका 9:35)।

मसीह की कलीसियाओं में होने वाली बातों के बारे में यह प्रश्न पूछे जाने पर मुझे प्रसन्नता होती है। उसी प्रकार, मेरा मानना है कि मुझे यह प्रश्न दूसरों से पूछने का अधिकार है कि ''आप ये काम किस अधिकार से कर रहे हो?''

''मसीही'' नाम का इस्तेमाल करने का अधिकार

चेले मसीही ''कहलाए'' थे (प्रेरितों 11:26)। पतरस ने हमें इस नाम से परमेश्वर की महिमा करने का उपदेश दिया (1 पतरस 4:16)। अत:, यह नाम हम ईश्वरीय अधिकार से अपनाते हैं। अब, क्या मैं उस नाम के विषय में पूछ सकता हूं जो आपने अपनाया है? क्या आपने इसे मसीह के अधिकार से अपनाया है? क्या यह पवित्र शास्त्र में कहीं मिलता है?

उद्धार की योजना को सिखाने का अधिकार

उद्धार के सम्बन्ध में, मसीह की कलीसियाओं की शिक्षा है कि व्यक्ति को अपना भाग पूरा करना चाहिए अर्थात उद्धार पाने के लिए विश्वास करना, अपने पापों से मन फिराना, मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार करना और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मे में गाड़े जाना आवश्यक है। इन शर्तों को पूरा करने की शिक्षा बहुत से पदों में मिलती है। (उदाहरण

के लिए, देखिये प्रेरितों 2:38 और रोमियों 10:10.)

परमेश्वर की संतान बनने के लिए ये बातें करने की शिक्षा का अधिकार हमें मसीह से मिला है। कोई यह शिक्षा किस अधिकार से दे सकता है कि उद्धार ''केवल विश्वास'' से ही होता है? याकूब ने स्पष्ट सिखाया कि अकेले विश्वास से ही कोई धर्मी नहीं ठहर सकता (याकूब 2:24)। अकेले विश्वास से उद्धार की शिक्षा सीधे मसीह के अधिकार के विरुद्ध है।

डुबकी का बपतिस्मा देने का अधिकार

हम डुबो कर बपतिस्मा किस अधिकार से देते हैं? पवित्र आत्मा ने पौलुस के द्वारा सिखाया कि हम बपतिस्मे में गाड़े जाते और जी उठते हैं (रोमियों 6:3, 4; कुलुस्सियों 2:12)। इफिसियों 4:5 में बताया गया है कि बपतिस्मा एक ही है। दूसरे लोग छिड़काव या उंडेलने को ''बपतिस्मा'' किस अधिकार से कहते हैं? निश्चय ही, ऐसा कहने का कोई अधिकार मसीह की ओर से नहीं है। याद रखें कि ''सारा अधिकार'' उसके पास है। यदि उसने यह शिक्षा नहीं दी, तो इसका अर्थ यह हुआ कि यह ईश्वरीय अधिकार से नहीं है।

केवल पश्चात्तापी विश्वासियों को बपतिस्मा देने का अधिकार

हम केवल पश्चात्तापी विश्वासियों को ही बपतिस्मा किस अधिकार से देते हैं? यीशु ने सिखाया कि बपतिस्मे से पहले विश्वास होना आवश्यक है (मरकुस 16:16)। प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम पढ़ते हैं कि लोगों ने बपतिस्मा लेने से पहले विश्वास किया था (प्रेरितों 8:12)। पतरस ने सिखाया कि बपतिस्मे से पहले मन फिराना आवश्यक है (प्रेरितों 2:38)। कुछ लोग शिशुओं पर छिड़काव किस अधिकार से करते हैं? क्या नए नियम में इसकी कोई आज्ञा या उदाहरण है? मुझे तो कोई नहीं मिला। इसलिए, बपतिस्मे के लिए शिशुओं पर छिड़काव का अधिकार मसीह की ओर से नहीं है।

आराधना के कार्यों के लिए अधिकार

प्रभु के दिन अपनी आराधनाओं में, नए नियम के मसीही परमेश्वर का वचन सिखाते, प्रार्थना करते, अपनी आमदनी में से चंदा देते, प्रभु भोज में भाग लेते, और गीत गाते हैं। हम ये काम किस अधिकार से करते हैं? गाने को छोड़कर इन सभी का उल्लेख प्रेरितों 2:42-47 में मिलता है, गाने का उल्लेख बाइबल में अन्य स्थानों पर मिलता है (इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:16)। प्रेरितों 20:7 में सप्ताह के पहले दिन रोटी तोड़ने का उल्लेख है। इनमें से किसी को भी किस अधिकार से निकाला जा सकता है? कोई वाद्य-संगीत अर्थात साज़ के साथ गाने को किस अधिकार से जोड़ सकता है? क्या मसीह ने इसका अधिकार दिया है? उसने इसका उल्लेख कहीं नहीं किया, इसलिए उसने इसका अधिकार नहीं दिया।

सारांश

कोई भी रीति जिसका अधिकार स्वर्ग से नहीं है, वह मनुष्यों की ओर से ही है। आइये यह सुनिश्चित करें कि हम वही काम करें जिनका अधिकार प्रभु यीशु की ओर से दिया गया है।

धैर्य का अर्थ

''धैर्य'' एक शानदार शब्द है जिसका अर्थ सहिष्णुता, दृढ़ प्रयत्न और चिरसहिष्णुता है। धैर्यवान होने के लिए बिना शिकायत के विपत्ति को सहना आवश्यक है। धैर्य में सहने की शक्ति, दुख सहने की शक्ति और प्रतीक्षा करने की शक्ति शामिल है। इसका उल्लेख उन सात अनुग्रहों में है जिन्हें हमें अपने जीवन में जोड़ने की आवश्यकता है (2 पतरस 1:6; देखिए इब्रानियों 12:1, 2)। यीशु हमारा सिद्ध आदर्श है, इसलिए आइए ध्यान दें कि उसने कैसे धैर्य दिखाया।

लोगों के साथ धैर्य। हम लोगों को जीतने के अपने प्रयासों में यीशु का धैर्य देखते हैं। यद्यपि उसको लोगों की भीड़ दबाती थी, फिर भी वह भलाई करता गया। चेलों द्वारा उसे समझने में असफल रहने पर भी वह उनके साथ धैर्यवान था। वह अपने शत्रुओं के साथ भी धैर्य बरतता था। वह क्षमा करने और उनके लिए परमेश्वर से क्षमा के लिए प्रार्थना करने को तैयार था।

परिस्थितियों के साथ धैर्य। पृथ्वी पर उसके जीवन का अनुसरण करने पर, हम यीशु को मुकदमे के दौरान, कलवरी पर देखते हैं, तो हमें अहसास होता है कि परिस्थितियां पूरी तरह से उसके वश में थीं। अय्यूब (देखिए याकूब 5:11) और पौलुस से (देखिए फिलिप्पियों 4:11) भी हम सीख सकते हैं। एक मसीही को संकटों तथा कठिनाइयों से छूट नहीं है, परन्तु उसे इनमें भी मन की शान्ति मिलती है। याकूब ने सिखाया कि परीक्षाओं से धैर्य बढ़ता है (याकूब 1:1–3)।

परमेश्वर के साथ धैर्य। यीशु अपने पिता की इच्छा के प्रति आज्ञाकारी था। उसने प्रार्थना की, ''तौभी मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो'' (लूका 22:42)। जब परमेश्वर अपनी योजनाओं पर कार्य कर रहा होता है तो हमें धैर्य रखना चाहिए। हमें प्रार्थना में दृढ़तापूर्वक लगे रहना चाहिए और कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को भूल गया है।